मिर्गी मरीजों के लिए

मिर्गी क्या है ?

मरीज अचानक मुर्छित स्थिति में आ जाए तथा शरीर के अंग जकड़ने लगे तो इसे फीट / दौरे / सीजर कहते हैं, अगर यह दौरे बार–बार पड़ने लग जाएँ तो इसे मिर्गी कहते हैं। मिर्गी रोग से अनेक लोग ग्रस्त हैं। कम–से–कम एक प्रतिशत व्यक्तियों को जीवन में एक बार मिर्गी का दौरा पड़ता है। विश्व में लगभग 2–4 प्रतिशत व्यक्ति मिर्गी से पीड़ित हैं। भारत में लगभग एक करोड़ मिर्गी के शिकार हैं। यह भी सत्य है कि 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत मरीज इस बीमारी से पूरी तरह ठीक हो जाते हैं। लगभग 10 से 20 प्रतिशत मरीज ऐसे भी हैं जो इस रोग से पूर्णतया बिना दवा के मुक्त नहीं हो पाते हैं। ऐसे लोगों को लम्बे समय तक उपचार लेने की आवश्यकता पड़ती है। यह भी सही है कि मिर्गी के मरीज सामान्य जीवन जी सकते हैं। शादी कर सकते हैं और एक माँ स्वस्थ शिशु को जन्म दे सकती है।

मिर्गी के दौरे कई तरह के होते हैं। एकतरफा मिर्गी तथा सम्पूर्ण शरीर की मिर्गी। अधिकांश मरीजों में इसका **कारण** स्पष्ट रूप से पता नहीं चल पाता है परन्तु कुछ में पैरासाइटिक संक्रमण, मस्तिष्क में टी. बी. की गाँठ, सर में लगने वाली चोट, मस्तिष्क में मौजूद गाँठ व इसके अतिरिक्त रक्त में शर्करा, नशीले पदार्थों का सेवन, नींद न आने की बीमारी, अधिक रोशनी, टी.वी. देखना आदि होते हैं।

मिर्गी के **निदान** के लिए निम्न परीक्षण किये जाते हैं – ई.ई.जी., सी.टी. स्कैन, एम.आर.आई. और रक्त के विभिन्न परीक्षण। मिर्गी के उपचार में सर्वप्रथम यह निश्चित कर लेना आवश्यक है कि उसे मिर्गी की बीमारी है भी या नहीं। इसके बाद मिर्गी के प्रकार, मरीज की उम्र और तथ्य जानने के उपरान्त उपचार किया जाता है।

यदि मरीज को मिर्गी का दौरा पड़ जाए तो कुछ **सावधानी** बरतनी आवश्यक है।

- आप मरीज को करवट के बल लिटा देवें।
- धैर्य रखें, कसकर बंद किये दाँतों के बीच कपड़ा लपेट कर रख दें।
- आसपास से नुकीली और सख्त चीजें हटा दें। मरीज के शरीर में होने वाली जकड़न या झटकों को रोकने की कोशिश न करें।
- मरीजों को प्याज या जूता सूंघाना व पानी छिटकने की प्रक्रिया अहितकारी है।

और विशेष बात यह है कि **यदि दौरा लम्बा चले तो डॉक्टर की सलाह अवश्य लेवें।** चिकित्सक तुरन्त नस में डाईजापाम जैसी दवाई लगा देगा । डाईजापाम को मरीज की गुदा में रखकर भी दौर बन्द कर सकते हैं और मरीज के परिजन भी यह कर सकते हैं।

मिर्गी का उपचार 3 से 5 वर्ष तक या कभी–कभी और भी लम्बे समय तक करना चाहिये। नियमित दवा, सही मात्रा में लेना न भूलें। नीम–हकीम व पत्र–पत्रिकाओं के विज्ञापन पर भरोसा नहीं करें। मिर्गी के रोगी को इस रोग के सम्पूर्ण ठीक होने पर ही वाहन चलाना सुरक्षित माना जाता है।

डॉ. हरित भण्डारी

(जनहित में प्रसारित)